Vol II Issue VI Dec 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 6, Dec. 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

''महाराष्ट्र के हिंदीतर भाषी ''डॉ. अर्जुन चव्हाण'' का सैद्धान्तिक, व्यवहारिक अनुवाद कार्य में योगदान । ''

मोहिते व्ही.एस.

सौ. मंगलताई रामचंद्र जगताप महिला महाविद्यालय, उंब्रज, ता. कराड,
जि. सातारा

सारांश

हिंदी केवल उत्तर की नहीं तो दक्षिण और हिंदीतर प्रदेशों में भी संपर्क भाषा के रुप में प्रयुक्त हो रही है । महाराष्ट्र उन राज्यों में अग्रणी राज्य है । जो हिंदीतर होते हुये भी हिंदी भाषा में अनुसंधान कार्य, अनुवाद कार्य, सृजनात्मक लेखन कार्य, समिक्षात्मक लेखन कार्य, एवं पत्रकारिता में भी अग्रणी रहा है, इसके लिए योगदान देनेवाले लेखकों में डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. के.पी. शहा, डॉ. व्ही.के. मोरे आदि का नाम गर्व से लिया जाता है । अर्थात उन्होंने विभिन्न प्रकार का साहित्य लिखकर हिंदी साहित्य को एक नयी दिशा दी है ।

डॉ. अर्जुन चव्हाण ने केवल अनुवाद को लेकर साहित्य नही लिखा तो बहुआयामी साहित्य के ये सृष्टा है । उदा. गजल, कविता–संग्रह आदि भी लिखें है। अनुवाद संबंधी इनके पुस्तकों की निर्मिती हिंदी साहित्य संसार के लिए अनमोल देन है । आज तक बडे–बडे विद्वानों ने अनुवाद प्रक्रिया के चरण बनाएँ परंतु सात चरणों का विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण लेखक ने किया है । अनुवाद समस्याएँ एवं समाधान को लेकर तो स्वतंत्र पुस्तक की रचना की है । परिभाषिक शब्दावली की भी अलग सूची दी है ।

डॉ. चव्हाणजी का साहित्य संसार देखने से में इस विचारों तक पहुँचती हूँ कि अहिंदीतर भाषी होते हुये भी अगाध निष्ठा के साथ इन्होंने साहित्य की सेवा की है । सिर्फ बायोडाटा बढाना, या धनराशी प्राप्त करना उद्देश न रखकर निस्वार्थी भाव से साहित्य सृजन कार्य में योगदान दिया है । इन्होंने तन–मन–धन से सरस्वती की वंदना की है । ऐसा कहा जाता है कि लक्ष्मी और सरस्वती एक साथ निवास नही करती परंतु अर्जुन चव्हाणजी के पास दोनों का निवास है । इसके लिए एक मात्र कारण है हिंदी के प्रति अगाध निश्ठा और लगन ।

ऐसे महान रचनाकार का साहित्य संसार देखनेसे मेरी आँखों के सामने अपने आप गुरू द्रोणाचार्य और अर्जुन का प्रसंग आता है । द्रोणाचार्य अपने बाकी के छात्रों को पूछते है कि ''आपने निशाना लगाया है, तो सामने क्या – क्या दिखाई देता है ? '' तो सभी अलग अलग उत्तर देते है, परंतु महाभारत का श्रेष्ठ धनुर्धारी अर्जुन कहता है – गुरू मुझे सिर्फ और सिर्फ पक्षी की आँख दिखाई देती है । और वह तीर छोडता है । निशाना बिल्कूल ठीक बैठता है उसी प्रकार इस आधुनिक काल के अर्जुन का एकमात्र लक्ष्य है हिंदी साहित्य संसार को क्षेष्ठ बनाना, मौलिकता देना । मैं अंत में इनके बारे में इतनाही कहूँगी कि सचमुच हिंदी साहित्य संसार को समृध्द बनाने की दिशा में अपना लक्ष्य माननेवाले ये आधुनिक काल के अहिंदीतर भाषी साक्षात अर्जुन है ।

1)भाषा का महत्व :–

मनुष्य एक समाजशील प्राणी है । यदि समाज में रहना है तो उसे एक दूसरे के विचारों का आदान–प्रदान करना पडता है । इसके लिए सबसे सशक्त कडी है ''भाशा'' भाशा भिन्नत के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच दूरियाँ बढती है । इस दूरी को यदि हटाना है तो इसके लिए ''अनुवाद'' प्रभावी माध्यम है । इसी प्रकार के सैद्धानिक व्यावहारिक अनुवाद में डॉ. अर्जुन चव्हाण का नाम महत्वपूर्ण है । डॉ. जी गोपीनाथन ने अपनी भूमिका में बिल्कूल सही लिखा है – ''विभिन्न भाशा–भाशी जनसमूह के बीच अंतःसंप्रेशण की प्रक्रिया के रूप में अनादिकाल से अनुवाद का विशिष्ठ योगदान रहा है । भारत जैसे बहुभाषा–भाषी राष्ट्र में अनुवाद का महत्व स्वयंसिध्द है '' । अर्थात यह बात यथार्थ है कि भाशा जितनी महत्वपूर्ण है उतनी उसकी अनुवाद प्रक्रिया भी महत्वपूर्ण है ।

2)अनुवाद अर्थ स्वरूप विशेषता :–

अनुवाद शब्द के अर्थ को लेकर डॉ. रिजवान अहमद ने 'हिंदी–उर्दू कोश में लिखा है – ''तजुर्मः'' । [2] हरदेव बाहरी ने अनुवाद का अर्थ दिया है'' 1) भाषांतर 2) समर्थन 3) दुहराना'' । [3] अर्थात एक भाशा साहित्य की सामग्री अन्य दूसरी भाषा में पुनः कहना या भाषांतरित करना । डॉ. अर्जुन चव्हाण ने अनुवाद चिंतन में बिल्कूल सहीं कहा है कि ''स्त्रोत भाषा की सामग्री लक्ष्य भाषा में यथावत अभिव्यक्ति अनुवाद है'' ।[4] अर्थात यहाँ यथावत यह शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है । अर्थात अनुवाद करते समय अनुवादक को स्त्रोत भाषा की सामग्री को सभी अर्थों की दृष्टि से न जादा बाते जोडकर न मूल को छोडकर अनुवाद करना चाहिए । अनुवाद के अर्थ को लेकर मतभिन्नता होते हुए भी ''यथावत्'' यह इसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया है ।

.

अनुवाद स्वरुप :–

अनुवाद वैसे देखा जाय तो कठीण और चुनौती भरा कार्य है । फिर भी बीसवीं सदी का युग अनुवाद युग कहलाया जाता हे । अनुवाद के अंतर्गत ''स्त्रोत'' भाषा की सामग्री को यथावत लक्ष्य भाषा में प्रकट किया जाता है। यह प्रक्रिया करते समय दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है । अनुवाद के स्वरूप को लेकर डॉ. सुरेश कुमार ने लिखा है ''अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है – पुनः कथन, एक बार कही हुयी बात को दोबारा कहना । इसमें अर्थ की पुनरावृत्ती होती है । शब्द (शब्द रुप) की नही'' ।[5] बिल्कूल सही है क्योंकि यदि मूल स्त्रोत भाषा का अनुवाद करते समय अर्थ को ही बदल दिया जायेगा तो मूलरचनाकार के साथ अन्याय होगा । ऐसा करने का हक अनुवादक को नही रहता । इसी को लेकर डॉ. अर्जुन चव्हाण ने बिल्कूल सही लिखा है – ''एक भाषा में व्यक्त विचार ठीक उसी रूप में व्यक्त करना अत्यंत कठिन कार्य है । मूलतः अनुवाद का स्वरूप उतना सहज और सरल नही है, जितना उपरी तौर पर देखने से लगता है ।''[6] फिर भी जब एक भाषा के पाठ सामग्री को मूल भाषिक अर्थ, शैली की विशेशता, विषय वस्तु, सांस्कृतिक विशेषता, धार्मिक विशेषता आदि बातों की ओर ध्यान देकर यदि दूसरी भाशा के पाठ सामग्री में रखेंगे तो अनुवाद थोडा बहुत क्यों न हो लेकिन स्तरीय होगा ।

डॉ. अर्जुन चव्हाणजी का अनुवाद कार्य में योगदान :–

हिंदीतर भाषी साहित्यकारों में हिंदी समीक्षा, हिंदी अनुवाद, आलोचना तथा अनुसंधान कार्य को समृद्ध बनानेवाले उँच – चुनिंदा विद्वानों में (लेखकों में) जो नाम आते है उनमें डॉ. अर्जुन चव्हाण का नाम प्रथम पंक्ति में आ जाता है ।

व्यक्तित्व कृतीत्व :–

डॉ. अर्जुन चव्हाण का नाम हिंदी अनुवाद, आलोचना, अनुसंधान क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर ख्यात–खीत होने के कारण महाराष्ट्र के लिए नया नही है । इन्होंने हिंदी विभाग प्रपाठक, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष जैसे विभिन्न पदों पर कार्यरत रहकर अपने प्रशासकीय कार्य के साथ–साथ अकादमिक कार्य को निरंतर गतिमान रखा है ।

गतिविधियाँ :–

प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद, सचिव शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी परिषद, आजीवन सदस्य भारतीय हिंदी परिषद, सदस्य हिंदी शोध समिती, शिवाजी विश्वविद्यालय, उपाध्यक्ष, ''अभिव्यक्ति'' साहित्य संस्था, एम.फिल, पी.एच.डी. शोध मार्गदर्शक – एम.फिल के 34 छात्र, पी.एच.डी.के 25 छात्र, आजीवन सदस्य दक्षिण भारत हिंदी परिषद ।

कृतित्व :–

डॉ. अर्जुन चव्हाण जी के प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 35 से ज्यादा 40 के करीब है । इसमें समिक्षात्मक, मौलिक, सृजनात्मक, अनुवादित, संपादित आदि अनेक विशय विविधता को लेकर पुस्तके प्रकाशित हुयी है । रिसर्च पेपर जो जर्नल्स में प्रकाशित हुये उनकी संख्या 50 है । रिसर्च प्रोजेक्ट 3 प्रकाशित है । जिन्हें शिवाजी विश्वविद्यालय न्ळब् न्यू दिल्ली से 8 हजार रूपये अदा किये गये । युनिव्हरसीटी ग्रँट कमिशन न्यू दिल्ली से 8 हजार रूपये अदा किये गये । युनिव्हरसीटी ग्रँट कमिशन न्यू दिल्ली से मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए 4 लाख 12 हजार पाचसौ साठ की राशी अदा की गयी । दूसरे मेजर प्रोजेक्ट के लिए युनिव्हरसीटी ग्रँट कमिशन न्यू दिल्ली से 9 लाख 46 हजार की राशी प्राप्त हुयी ।

अनुदित साहित्य :–

अनुदित पुस्तकों के अंतर्गत भी इनका बहोत बडा योगदान है । प्रसिद्ध मराठी लेखिका अनुराधा गुरव का कथा संग्रह ''गुंता सोडविताना'' का ''उलझन को सुलझाते वक्त'' शिर्षक से अनुवाद किया । दादासाहेब मोरे की मराठी आत्मकथा ''गबाळ'' का ''डेराडंगर'' नाम से अनुवाद प्रकाशित हुआ । राधा–कृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली से इसका प्रकाशन हुआ । प्रसिद्ध हिंदी समिक्षक डॉ. नामवरसिंह के हाथों इसका लोकार्पण हुआ । मराठी के प्रसिद्ध साहित्यिक शाम मनोहर के ''कळ'' नामक उपन्यास आधारित हिंदी नाटयानुवाद किया । मराठी के प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त वि.स.खांडेकर के निधन के बाद ''क्षितीज स्पर्श'' का हिंदी अनुवाद ''क्षितिज स्पर्श'' नाम से अनुवाद किया । मराठी के कवि और लेखक डी.बी. रत्नाकर का काव्यसंग्रह ''हॉटेल माझा देश '' का ''होटल मेरा देश'' नाम से हिंदी अनुवाद किया । मराठी के लेखक निशिकांत मिरजकर के शाहू महारज के जीवन पर आधारित ''सामाजिक लोकशाहीचे आधार स्तंभ'' का हिंदी अनुवाद किया ।

अनुवाद विधा को लेकर संदर्भ ग्रंथ के रुप में दो महत्त्वपूर्ण पुस्तके प्रकाशित हुयी है ।

1) अनुवाद :– समस्याएँ एवं समाधान 2) अनुवाद चिंतन जो बी.ए., एम.ए. के छात्रों के लिए बहुत ही उपयोगी है । मैं कहना चाहूँगी कि केवल छात्र ही नहीं तो सभी अनुवादकों के लिए भी ये किताबें मार्गदर्शक बनेगी ।

1)अनुवाद चिंतन :–

इस किताब की मौलिकता यह है कि इन्होंने अनुवाद प्रक्रिया पर स्वतंत्र टॉपीक बनाकर उसका विस्तृत विवेचन किया है । इन्होंने अनुवाद प्रक्रिया के सात चरण माने है जो कि भोलानाथ तिवारी ने, रीताराणी पालीवाल, विश्वनाथ अय्यर जिन्होंने इससे कम चरण मानकर अनुवाद प्रक्रिया पर चर्चा की है ।

पाश्चात्य विद्वान नायडा ने इसके तीन चरण माने है । डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इसके पाँच चरण माने है । इन्होंने कहा है – ''वस्तुतः अनुवाद करते समय मैने स्वयं पाया है कि स्पष्टता या अस्पश्टता अनुवादक को इन पाँच चरणों से गुजरना पडता है'' ।[7] परंतु डॉ. अर्जुन चव्हाण की दृश्टि से अनुवाद के सात चरण बताए है । इसी को लेकर इनका कथन दृष्टव्य है । ''मैं स्वयं इस प्रक्रिया के अंतर्गत सात चरण स्थापित करने के पक्ष में हूँ । ये वे सात चरण हैं जिनसे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अनुवाद कार्य काल में अनुवादक को गुजरना पडता है ।''[8] अर्थात स्पष्ट है कि अनुवादक प्रक्रिया के इन सात चरणों का अनुदय पाठ के अनुसार कम अधिक महत्व जरूर है । अनुवाद चिंतन किताब की यह एक मौलिकता है कि अनुवाद प्रक्रिया के सात चरणों का उल्लेख करके अनुवाद प्रक्रिया को और भी सुलभ और आसान बनाने का कार्य किया है ।

'अनुवाद चिंतन' पुस्तक में लेखक चव्हाणजी ने सात अध्यायों के अंतर्गत अनुवाद का महत्व से लेकर अनुवाद के गुणों तक की विस्तृत चर्चा करके अनुवाद की पूरी प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है । मुझो तो लगता है कि यहाँ लेखक ने ''गागर में सागर'' भर दिया है । यहीं इस किताब की नवीनता और मौलिकता है ।

3)अनुवाद :समस्याएँ एवं समाधान :–

यह भी चव्हाणजी की मौलिक कृती है । इसमें उन्होंने बिल्कूल सही लिखा है – ''अनुवाद का महत्वपूर्ण दायित्व यह बनता है कि वह अनुवाद को मूल के निकट ले जाये जितना संभव हो सके उतना ही निकट । बहुत – बहुत और बहुत ही निकट । निकट ही नही तो निकटतम'' ।[9] अर्थात यह करते समय अनुवादक को उस रचना के साथ पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए । तभी वह अनुवाद स्तरीय अनुवाद होगा । 'अनुवादः समस्याएँ एवं समाधान' नाम की स्वतंत्र रचना निर्माण करके हिंदी साहित्य संसार को एक नयी उपलब्धि प्रदान की है । क्योंकि ''समस्याएँ एवं समाधान'' विषय पर ऐसी किताब अभी तक किसी से प्रकाशित नही हुयी है और न ही इस प्रश्न को उठाया है । इस किताब की और एक मौलिकता मुझे दिखाई दी की इसमें पारिभाषिक शब्दावली (हिंदी अंग्रेजी – अंग्रेजी हिंदी) भी स्वतंत्र रूप से दी है । पारिभाषिक शब्दावली को लेकर डॉ. के.पी शहा ने सही लिखा हैं – ''पारिभाशिक शब्दावली और प्रयोग के मानकीकरण के लिए न्यूनतम शब्दों के प्रयोग का आग्रह किया है ।[10] ऐसी शब्दावली को उदाहरण के तौरपर डॉ. अर्जुन चव्हाणजीने अपनी रचना में स्पष्ट किया है । लेखक ने यहाँ अनुवाद करते समय आयी समस्या और उसका समाधान विस्तृत रूप से एक पूरे टॉपीक के अंतर्गत स्पष्ट किया है ।

साहित्य की उपयोगिता :–

उपर्युक्त दो किताबे छात्रों के लिए, अनुवादक के लिए बहुत ही उपयोगी है। इन पुस्तकों की विशेषता है कि अनुवाद संबंधी सभी विषयों का सूक्ष्मता से विवेचन किया है । सभी विश्वविद्यालयों के छात्र इसका लाभ उठाते है । क्योंकि देश का शायद ही कोई विश्वविद्यालय होगा कि अनुवाद को न देखता हो न पढता हो । चव्हाणजी ने उपयोगिता को लेकर चित्रात्मक शैली का आधार लिया है और एक साथ 25 उपयोगों का विश्लेषण चित्र रूप में किया है । जिसमें समाज की सभ्यता एवं संस्कृती से परिचय होता है । अनुवाद से विचारों में समृध्दी, भाषा साहित्य में भी समृध्दी होती है । मानव समाज के उन्नती का अनुवाद यह प्रशस्त मार्ग है । व्यापार में वृध्दी प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों का परिचय, आदान–प्रदान की भावना अनुवाद को जन्म देती है । अनुवाद नौकरी पाने का भी स्त्रोत है । इसके संदर्भ में चव्हाण जी ने लिखा है –''अनुवाद पद्विका, पदवी पाठयक्रम, प्रशिक्षण, पाठयक्रम कार्यशालाएँ आदि को भली–भाँति पूर्ण करनेवाले छात्रों का वर्तमान और भविष्य दोनों उज्वल है'' मानव धर्म का प्रचार विश्वबंधुत्व की भावना भी अनुवाद के कारण दृढ होती है ।

अनुवाद पंरपरा पुरानी होते हुए भी आज इस आधुनिक काल में इसे कुछ अलग महत्व प्राप्त हुआ है । विविध प्रकार की उपयोगिता के कारण अनुवाद का महत्व दिन–ब–दिन बढता ही जा रहा है । परंतु डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी का मत है – ''लेखक की भांति अनुवादक को भी ''रॉयल्टी'' दी जाए ।[12] सचमुच यह बात बिल्कूल ठीक है कि यदि ऐसा होगा तो युवक या व्यक्ति वास्तविक रूप से इसमें रूची लेकर यह क्षेत्र अपनाऐंगे ।

पुरस्कार एवं सम्मान :–

हिंदी तर भाषी समृध्द साहित्यकार अर्जुन चव्हाण जिन्हे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है ।

1)अनुवादः समस्याएँ एवं समाधान किताब के 2002 में तत्कालिन प्रधान मंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के हाथों रू 50 हजार की राशी देकर सम्मानित किया गया है। (अहिंदी भाषी प्रदेश के हिंदी लेखक)
2)''अनुवाद चिंतन'' के लिए 1997–98 में 50 हजार की धनराशी देकर म. प्रसाद द्विवेदी राज्य पुरस्कार से गौरवान्वित किया ।
3)''राजेंद्र यादव के उपन्यासों में महानरीय जीवन'' पुस्तक के लिए 7 हजार 500 की U.G.C. – युनिव्हरसीटी स्कीम से रॉयल्टी मिलती है ।
4)जालना जिले के बदलापूर में संपन्न अधिवेशन में ''जरा याद करो कुर्बानी'' के लिए ''सृजनशील लेखन'' पुरस्कार प्राप्त हुआ है । (नागपूर अधिवेशन – महाराष्ट्र हिंदी परिषद, 2005).
5)''राष्ट्रीय हिंदी सेवा सहस्त्राब्धी सम्मान'' भी प्राप्त हुआ। (न्यू दिल्ली सन 2000)

अपने किताबों को रॉयल्टी मिलनेवाले दो ही लेखक है जिसमें डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर और डॉ. अर्जुन चव्हाण आ जाते है ।

साक्षात्कार में विचार :–

डॉ. अर्जुन चव्हाण जीने साक्षात्कार में जो बातें कहीं वे हिंदी साहित्य संसार को प्रगल्भ बनाने में जरूर उपयोगी होगी । अनुवाद कार्य कितना घातक है इसका उदाहरण देते हुये कहा कि ''बायबल'' में एक गलत अनुवाद करने पर अनुवादक को फाँसी की सजा दी थी'' । अर्थात स्पष्ट है कि अनुवाद कार्य जितना महत्वपूर्ण है उतना ही जिम्मेदारी का है । अनुवाद को लेकर अपनी धारणा बताते हुए कहा – ''जोड–छोड–वर्ज्य'' यह मेरी अपनी भूमिका है । अर्थात अनुवादक ध्यान में रखें कि स्त्रोत भाषा को लक्ष्य भाशा में परिवर्तीत करते समय अपने मन की बातों को जोडना नही चाहिए और मूल भाषा के भाव, अर्थ आदि को छोडना भी नही चाहिए । इन्होंने कहा कि ''जो चॅलेंजेबल होता है इसका ही अनुवाद करना में पसंद करता हूँ । लेखक या अनुवादक को लेकर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने ''अनुवादः एमस्याएँ एवं समाधान'' किताब में भी बिल्कूल सही लिखा है– ''हमारे देश में पुरस्कार बुढों कों खुश करने के लिए दिए जाते है ।''[13] यह बिल्कूल बराबर है क्योंकि यदि ऐसे रचनाकारों का उचित समय पर सम्मान होता तो जरूर वे हिंदी साहित्य के लिए अपना और अधिक योगदान देते और हिंदी साहित्य को समृध्द बनाते । साक्षात्कार में उन्होंने कहा – ''अनुवाद एक वफादार प्रेम है । अर्थात जो वफादारी प्रेम में आवश्यक और महत्वपूर्ण है, वही अनुवाद में अपेक्षित है ।

घटिया दर्जेवाले अनुदित साहित्य जिसे लेकर चव्हाणजी ने कहा –

''अनुवाद के नाम पर कुछ भी कुडा–करकट आ रहा है । विशेषतः अपना ॲकॅडमिक बायोडाटा बनाने के लिए निम्न दर्जेवाला

अनुवाद छपता जा रहा है । उसे मैं ''पेपर टायगर्स'' कहता हूँ ।

निष्कर्ष :–

हिंदी केवल उत्तर की नही तो दक्षिण और हिंदीतर प्रदेशों में भी संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही है । महाराष्ट्र उन राज्यों में अग्रणी राज्य है । जो हिंदी तर होते हुये भी हिंदी भाषा में अनुसंधान कार्य, अनुवाद कार्य, सृजनात्मक लेखन कार्य, समिक्षात्मक लेखन कार्य, एवं पत्रकारिता में भी अग्रणी रहा है, इसके लिए योगदान देनेवाले लेखकों में डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. के.पी. शहा, डॉ. व्ही.के. मोरे आदि का नाम गर्व से लिया जाता है । अर्थात उन्होंने विभिन्न प्रकार का साहित्य को एक नयी दिशा दी है ।

डॉ. अर्जुन चव्हाण ने केवल अनुवाद को लेकर साहित्य नही लिखा तो बहुआयामी साहित्य के ये सृष्टा है । उदा. गजल, कविता संग्रह आदि भी लिखें है। अनुवाद संबंधी इनके पुस्तकों की निर्मिती हिंदी साहित्य संसार के लिए अनमोल देन है । आज तक बडे–बडे विद्वानों ने अनुवाद प्रक्रिया के चरण बनाएँ परंतु सात चरणों का विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण लेखक ने किया है । अनुवाद समस्याएँ एवं समाधान को लेकर तो स्वतंत्र पुस्तक की रचना की है । परिभाषिक शब्दावली की भी अलग सूची दी है ।

डॉ. चव्हाणजी का साहित्य संसार देखने से मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचती हूँ कि अहिंदीतर भाषी होते हुये भी अगाध निष्ठा के साथ इन्होंने साहित्य की सेवा की है । सिर्फ बायोडाटा बढाना, या धनराशी प्राप्त करना उद्देश न रखकर निस्वार्थी भाव से साहित्य सृजन कार्य में योगदान दिया है । इन्होंने तन–मन–धन से सरस्वती की वंदना की है । ऐसा कहा जाता है कि लक्ष्मी और सरस्वती एक साथ निवास नही करती परंतु अर्जुन चव्हाणजी के पास दोनों का निवास है । इसके लिए एक मात्र कारण है हिंदी के प्रति अगाध निष्ठा और लगन ।

ऐसे महान रचनाकार का साहित्य संसार देखनेसे मेरी आँखों के सामने अपने आप गुरू द्रोणाचार्य और अर्जुन का प्रसंग आता है । द्रोणाचार्य अपने बाकी के छात्रोंको पूछते है कि ''आपने निशाना लगाया है, तो सामने क्या–क्या दिखाई देता है ''? तो सभी अलग अलग उत्तर देते है, परंतू महाभारत का श्रेश्ठ धनुर्धारी अर्जुन कहता है – गुरू मुझे सिर्फ और सिर्फ पक्षी की आँख दिखाई देती है । और वह तीर छोडता है । निशाना बिल्कूल ठीक बैठता है उसी प्रकार इस आधुनिक काल के अर्जुन का एकमात्र लक्ष्य है हिंदी साहित्य संसार को श्रेष्ठ बनाना, मौलिकता देना । इनका भी तीर ठीक निशाने पर लगा हुआ है । यह इनका साहित्य संसार देखने से और पढने से महसूस होता है । मैं अंत में इनके बारे में इतनाही कहूँगी कि सचमुच हिंदी साहित्य संसार को समृध्द बनाने की दिश में अपना लक्ष्य माननेवाले ये आधुनिक काल के अहिंदीतर भाषी साक्षात अर्जुन है ।

संदर्भ :–

1)डॉ. जी गोपीनाथन	–	अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग	–	भूमिका
2)डॉ. रिजवान अहमद	–	हिंदी – उर्दू कोश	–	पृष्ठ–10
3)डॉ. हरदेव बाहरी	–	राजपाल हिंदी कोश	–	पृष्ठ–32
4)डॉ. अर्जुन चव्हाण	–	अनुवाद चिंतन	–	पृष्ठ–41
5)डॉ. सुरेश कुमार	–	अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा	–	पृष्ठ–25
6)डॉ. अर्जुन चव्हाण	–	अनुवादः समस्याएँ एवं समाधान	–	पृष्ठ–04
7)डॉ. भोलानाथ तिवारी	–	अनुवाद विज्ञान	–	पृष्ठ–103
8)डॉ. अर्जुन चव्हाण	–	अनुवाद चिंतन	–	पृष्ठ–58
9)डॉ. अर्जुन चव्हाण	–	अनुवादः समस्याएँ एवं समाधान	–	पृष्ठ–09
10)डॉ. के.पी. शहा	–	अनुवाद स्वरूप एवं सिद्धान्त	–	पृष्ठ–169
11)डॉ. अर्जुन चव्हाण	–	अनुवाद चिंतन	–	पृष्ठ–7
12)डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी	–	हिंदी में व्यावहारिक अनुवाद	–	पृष्ठ–190
13)डॉ. अर्जुन चव्हाण	–	अनुवादः समस्याएँ एवं समाधान	–	पृष्ठ–04

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1)हिंदी – उर्दू कोश	–	डॉ. रिजवान अहमद
2)राजपाल हिंदी शब्दकोश	–	डॉ. हरदेव बाहरी
3)अनुवाद सिद्धान्त एवं प्रयोग	–	डॉ. जी. गोपीनाथन
4)अनुवाद समस्याएँ एवं समाधान	–	डॉ. अर्जुन चव्हाण
5)अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा	–	डॉ. सुरेश कुमार
6)अनुवाद स्वरूप एवं सिद्धान्त	–	डॉ. के. पी. शहा
7)अनुवाद चिंतन	–	डॉ. अर्जुन चव्हाण
8)डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी	–	हिंदी में व्यावहारिक अनुवाद ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net